E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 8 | August 2025

महिलाओं के आर्थिक परिवर्तन में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के मुद्दे और चुनौतियाँ

राजेश कुमार
शोध छात्र, अर्थशास्त्र विभाग, बयालसी पी0जी0 कॉलेज, जलालपुर, जौनपुर (उ0प्र0)
(वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय)

शोध सारांश :

देश के आर्थिक विकास के लिए महिलाओं को सशक्तिकरण का होना बहुत ही जरूरी होता है, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना में महिलाओं के सन्दर्भ में देखा जाय तो इस योजना से केवल रोजगार ही नहीं मिलता बल्कि उनके द्वारा किये गये गुणात्मक सुधार के साथ–साथ बेहतर रूप से उत्पादकता को बढ़ाता है। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना से महिलाओं में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता को और अधिक बढ़ाता है। किसी भी देश की आर्थिक परिवर्तन में आधा हिस्सा महिलाओं का है, जो उद्यमियों की संख्या में वृद्धि करके दुनिया की अर्थव्यवस्था में तेजी से वृद्धि लायी जा सकती है। इससे न केवल आर्थिक रूप से बल्कि सामाजिक रूप से देश मजबूत होगा।

महिला किसानों के लिए प्रधानमंत्री कौशल विकास तथा क्षमता निर्माण के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय और किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा अनेक कार्यक्रम तथा प्रशिक्षण चलाए जा रहे हैं जिससे महिलाओं के आर्थिक तथा सामाजिक प्रगति में तेजी से वृद्धि लायी जा सके।

पिछले कुछ वर्षों में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं की भागीदारी में कई गुना वृद्धि देखी गयी है। इस वृद्धि से घरेलू हिंसा में कमी देखी गयी तथा वे भी आत्मनिर्भर हो रही है।

कुंजी शब्द– प्रधानमंत्री कौशल विकास, प्रशिक्षण, सशक्तिकरण आर्थिक परिवर्तन, उन्मूलन।

प्रस्तावना :

भारत सरकार ने भारत के युवाओं के लिए प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के द्वारा युवाओं के विभिन्न क्षेत्रों में उनमें आत्मनिर्भर विकसित करने के लिए इस योजना की शुरूआत 15 जुलाई 2015 को अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस पर वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा किया गया। जब यह योजना चालू किया गया तो 40 करोड़ लोगों को 2022 तक प्रशिक्षण देने का लक्ष्य रखा गया। यह योजना अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सका लेकिन फिर भी बहुत से युवाओं को उनके लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान किया। विगत कुछ वर्षों में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना से भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में देखा गया है। आज महिलाएँ कौशल एवं ज्ञान को प्राप्त करके तथा रोजगार की क्षमता में वृद्धि करके भारत के वित्तीय क्षमता को बढ़ाकर देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। जब भी महिलाओं को अपनी कौशल क्षमता को विकसित करने का अवसर मिलता है, तो वे अधिक से अधिक कौशल प्राप्त कर अपने जीवन के बारे में निर्णय लेने में वे सक्षम हो जाती हैं। भारत सरकार ने महिलाओं के लिए अनेक प्रकार के महत्वपूर्ण योजनाएँ जैसे– प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पी0एम0के0वी0वाई0) मेक इन इंडिया अभियान, उज्ज्वला योजना राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन इत्यादि योजनाओं को लागू किया है।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना से युवाओं के साथ महिलाएँ भी ट्रेनिंग लेकर आर्थिक तथा सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण वृद्धि देखा गया है। इस वृद्धि से महिलाओं के आत्मसम्मान में वृद्धि के

साथ घरेलू हिंसा में बहुत अधिक कमी आयी है। आत्मनिर्भर महिलाएँ अपना तथा अपने परिवार का विकास खुद कर रही हैं तथा देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रही हैं।

साहित्य की समीक्षा :

चन्द्रा, डॉ0 तूलिका (2018) के अनुसार उनके शोध पत्र ''कौशल विकास और महिला सशक्तिकरण'' में लिखा है कि किसी भी देश की तीव्र आर्थिक विकास के लिए महिलाओं का सशक्तिकरण का होना बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। कौशल विकास के द्वारा महिलाओं को रोजगार प्राप्त करने में सहायक होगा जिससे घरेलू हिंसा के साथ–साथ सामाजिक तथा आर्थिक रूप से उत्पन्न समस्याओं का समाधान हो सकता है। आज भी महिलाओं की अत्यधिक संख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती हैं। जिससे उनको कौशल विकास का प्रशिक्षण देना कोई सरल कार्य नहीं है। क्योंकि गरीबी अशिक्षा, सुरक्षा इत्यादि अनेक प्रकाश की समस्याएँ उनके सामने खड़ी रहती है। विश्व स्तर पर तुलना किया जाय तो भारतीय महिलाओं की भागीदारी कौशल विकास तथा निर्माण में बहुत ही निम्न स्तर पर हम खड़े हैं। इसी कमी को दूर करने के लिए प्रधानमंत्री ने कौश्ल विकास नामक योजना को लागू किया गया। इस योजना से 35 लाख महिलाओं को कौशल प्रदान किया गया तथा अब वे नये भारत के निर्माण में अपना सकारात्मक भूमिका अदा कर रही है।

तिवारी, दिलीप (2023) के अनुसार शोध पत्र ''ग्रामीण युवाओं पर प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना का योगदान'' में लिखा है कि प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना से उन युवकों तथा महिलाओं को अधिक लाभ प्राप्त हुआ है। किसी कारणवश अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ दिये हैं एवं वे इस योजना में प्रशिक्षण ले रहे हैं तथा वे भी बाजार मांग के अनुरूप अपने कौशल को विकसित कर रहे हैं। इन प्रशिक्षण केन्द्रों को केन्द्र तथा राज्य सरकारें संचालित करती हैं तथा इनका मुख्य कार्य युवाओं के लिए रोजगार के अवसरों का निर्माण करना होता है। कौशल विकास से प्राप्त प्रमाण पत्र के द्वारा वे सरकारी तथा निजी क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सके। कौशल विकास से प्राप्त प्रशिक्षुओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए बैंक से कम से कम ब्याज दर पर ऋण की व्यवस्था बैंक द्वारा की गयी है।

अंशुमान पत्रिका में प्रकाशित ''कौशल विकास और उद्यमिता के माध्यम से महिला सशक्तिकरण'' भारत में जैसे–जैसे कौशल के विकास में महिलाओं की संख्या में वृद्धि होती जायेगी तब भारत तेजी से विकसित की ओर अग्रसर होगा। भारत सरकार ने कौशल विकास के महत्व को पहचाना तथा इसको बढ़ाने के लिए अनेक प्रकार के कार्यक्रम एवं नीतियाँ लागू की जा रही है। महिलाओं को और अधिक सशक्तिकरण के लिए एजेंडों तथा निर्माण के लिए सरकारी तथा गैर सरकारी संगठनों को मिलकर प्रयास करने की जरूरत है। इसके अतिरिक्त भारत सरकार ने डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए महिलाओं को महत्वपूर्ण डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर ले जाने का अधिकार प्रदान किया है।

महिलाओं के आर्थिक परिवर्तन में प्रधानमंत्री कौशल विकास का उद्देश्य :

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को पुरुषों के समान अवसर प्रदान करना तथा उनके रुचि के अनुसार व्यवसायिक में प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी पूरी क्षमता के अनुसार स्वरोजगार खोल सके तथा वे भी देश की अर्थव्यवस्था में भाग ले सके। इसके अलावा भी निम्न उद्देश्य हैं–

- भारत में गरीबी तथा रूढ़िवादी विचारधारा के कारण आज भी अधिकांश महिलाएं अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ देती हैं। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के द्वारा महिलाएं प्रशिक्षण में भाग लेकर अपना तथा अपने परिवार का आर्थिक विकास बहुत आसानी से कर सकती हैं।

- प्रधानमंत्री कौशल विकास के लाभों के बारे में महिलाओं को जानकारी देना और उनके अन्दर छिपी कौशल या हुनर की पहचान करना तथा उनके अन्दर आजीविका के लिए कार्य को सुनिश्चित करना जिससे वे भी आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित करना।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना से महिलाओं के आर्थिक विकास पर प्रभाव :

दुनिया की सम्पूर्ण जनसंख्या को मिलाकर देखा जाय तो पुरुषों तथा महिलाओं की आबादी लगभग आधी है और यह भी सत्य है कि बाकी आधी आबादी की जननी महिलाएं ही हैं लेकिन फिर भी अधिकांश देशों में महिलाओं की स्थिति आज भी दयनीय बनी हुई है। महिलाओं की उद्यमियों की संख्या में और अधिक वृद्धि करके दुनिया की अर्थव्यवस्था में तेजी से क्रान्ति लायी जा सकती है। जिससे न केवल विकास की रफ्तार तेज होगी, बल्कि जिम्मेदारियाँ भी एक दूसरे को देने से समस्या तथा अधिक वैकल्पिक समाधान उपलब्ध होंगे। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना एवं कार्यक्रम के द्वारा महिलाओं को पुरुषों के समकक्ष लाने तथा उनके सामाजिक के साथ–साथ आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान किया। भारत सरकार ने महिला किसानों के लिए कौशल विकास तथा क्षमता निर्माण के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय तथा विकास कल्याण मंत्रालय द्वारा अनेक प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, जिससे महिलाओं की कार्यक्षमता तथा भागीदारी में तेजी से वृद्धि देखी गयी है। भारतीय महिलाएं आज खेत से लेकर आई0टी0 क्षेत्र, मीडिया, बैंक तथा बाजार तक अपना हुनर दिखा रही हैं। वर्तमान युग में महिलाएं किसी से कम नहीं हैं, महिलाओं को उनके अधिकार सम्पन्न बनाने से आने वाली भावी पीढ़ियों को अधिक फायदा होता है क्योंकि महिलाएं अपना ज्यादातर समय अपने बच्चों की शिक्षा तथा स्वास्थ्य की देखभाल पर समय बिताना चाहती हैं जिससे भविष्य में उत्पादकता में वृद्धि देखी जा सकती है। एक महिला दूसरी महिलाओं को उद्यमी बनाने के लिए प्रेरित करती रहती हैं। इससे महिलाओं के रोजगार में नए–नए अवसर उत्पन्न होते रहते हैं, जिससे स्त्री–पुरुष में जो कार्य शक्ति में असमानता व्याप्त है उसे कम करने में मदद मिलती है।

पूर्वोत्तर क्षेत्रों में देखा गया है कि अधिकांश महिलाएं पारम्परिक उद्यमों जैसे– हस्तशिल्प, हथकरघा, जैम–जैली, ब्यूटीपार्लर, आचार बनाने तथा ब्रेकरी चलाने में लगी हुई हैं।

भारत जैसे विकासशील देशों में लगभग सभी क्षेत्रों में चाहें प्राइवेट हों या सरकारी महिलाओं के साथ भेद–भाव होता रहा है, लेकिन आजादी के बाद यह ग्राफ धीरे–धीरे घटता गया है। उस समय पितृसत्तात्मक व्यवस्था एवं पुरानी परम्पराओं ने महिलाओं का जीवन में अनेक प्रकार की कुप्रथाएँ थीं जैसे महिलाओं को पुरुषों के बराबर न तो सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक रूप से दर्जा नहीं दिया गया तथा वे घर की चहारदीवारी में कैद रहती थीं। ग्रामीण की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति अच्छी थी परन्तु यह भी इनकार नहीं किया जा सकता कि अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती थीं। वर्तमान समय में ये बाधाएँ धीरे–धीरे कम होती जा रही हैं। महिलाओं में शिक्षा और रोजगार की समस्या आज भी विकराल रूप धारण किये हुए हैं इन्हीं सभी समस्याओं को दूर करने के लिए भारत सरकार तथा राज्य सरकारों ने अनेक प्रकार की योजनाएँ जैसे– प्रधानमंत्री कौशल विकास, उस्ताद योजना, मनरेगा तथा विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना के द्वारा बेरोजगारी को कम करने का प्रयास किया जा रहा है।

महिलाओं के आर्थिक परिवर्तन में प्रधानमंत्री कौशल विकास के मुद्दे और चुनौतियाँ :

विश्व में भारत तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में एक है तथा यहाँ श्रमशक्ति का अधिक होना सबसे बड़ी उपलब्धि है। भारत की कुल जनसंख्या में 49 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी पायी जाती है जो विकसित राष्ट्र बनाने के लिए कौशल विकास का होना आवश्यक है क्योंकि भारत के कार्य बल में महिलाओं की संख्या दशकों से अपर्याप्त रही है। पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं में व्यवसायिक प्रशिक्षण

प्राप्त करने के अनुपात से बहुत कम है। आज भी महिलाओं के मार्ग में आने वाली चुनौतियों में सबसे पहले अशिक्षा, रूढ़िवादी परम्परा, गरीबी इत्यादि के कारण प्रशिक्षण में भाग नहीं ले पाती हैं। इसके अलावा घरेलू काम तथा अवैतनिक देखभाल में बिताया जाने वाला समय महिलाओं को औपचारिक रूप से कार्यबल करने से रोकता है। आज भी भारत में महिलाएँ की भागीदारी उस क्षेत्र में सबसे ज्यादा पायी जाती है जहाँ नारी–प्रधान जैसे क्षेत्र कताई–बुनाई, सौन्दर्य, स्वास्थ्य सेवा तथा परिधान के अन्तर्गत आती है। प्रधानमंत्री कौशल विकास में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए महिलाएँ दूर नहीं जाना चाहती है क्योंकि उनमें असुरक्षा की कमी महसूस करती है। कौशल विकास आज भी कुछ समुदायों के लिए चुनौती है जो कई पीढ़ियों से अपनी पारंपरिक व्यवसायों पर निर्भर है।

महिलाओं के आर्थिक परिवर्तन एवं प्रधानमंत्री कौशल विकास के लिए आवश्यक सुझाव :

1. महिलाओं में आर्थिक परिवर्तन के लिए प्रधानमंत्री कौशल विकास केन्द्र ज्यादा दूर नहीं होना चाहिए जिससे कि उनमें असुरक्षा की भावना पैदा होगी और वह नियमित प्रशिक्षण में भाग नहीं ले पाएगी। जिससे शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र में और अधिक असमानता बढ़ेगी।
2. महिलाओं को रूढ़िवादी परम्परा का त्याग कर तथा प्रधानमंत्री कौशल विकास के महत्वों के बारे में बताना चाहिए जिससे वे भी व्यवसायिक में प्रशिक्षण लेकर स्वरोजगार खोल सके।
3. प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना में महिलाओं को नवीनतम शिक्षण विधि और तकनीकी विधि में प्रशिक्षण देना चाहिए जिससे कि वे बाजार मांग के अनुरूप अपना व्यवसाय खोल सकें।
4. प्रधानमंत्री कौशल विकास में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद निगरानी की उचित व्यवस्था होनी चाहिए जिससे प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना में लोगों का विश्वास बना रहे।
5. महिलाओं के आर्थिक परिवर्तन के लिए कौशल विकास केन्द्रों पर 30 प्रतिशत सीटें महिलाओं के लिए रिजर्व रखना चाहिए जिससे पुरुष तथा महिलाओं के बीच असमानता में कमी आएगी।

निष्कर्ष :

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के द्वारा महिलाओं के आर्थिक परिवर्तन के लिए उनके रुचि के अनुसार प्रशिक्षण दिये जा रहे हैं। महिलाएं इसमें बढ़–चढ़कर प्रशिक्षण में भाग ले रही हैं तथा वे अपना और अपने परिवार की आर्थिक विकास कर रही हैं। प्रधानमंत्री कौशल विकास में प्रशिक्षित महिलाओं को सम्मान की दृष्टि से देखा जा रहा है। इससे उनमें घरेलू हिंसा में कमी आयी है। ग्रामीण महिलाओं की अपेक्षा शहरी महिलाओं की स्थिति बहुत अच्छी देखी गयी है तथा यह भी नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता कि भारत की अधिकांश आबादी गाँवों में निवास करती है तथा यह असमानता बहुत धीरे–धीरे कम हो रही है। वर्तमान युग में महिलाएँ पुरुषों से कम नहीं हैं, प्रशिक्षित महिलाएँ अपना ज्यादा समय बच्चों के शिक्षा और स्वास्थ्य पर देखभाल कर रही हैं। एक प्रशिक्षित उद्यमी महिला दूसरी महिला को उद्यमी बनाने के लिए अधिक जागरूक करती रहती हैं, जिससे महिलाओं में नए–नए रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे तथा शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र की असमानता कम होगी। महिलाएँ प्रधानमंत्री कौशल विकास से प्राप्त प्रमाण पत्रों के द्वारा स्वरोजगार खोलने के लिए बैंकों से कम से कम ब्याजदर पर ऋण की सुविधा आसानी से प्राप्त कर रही हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. बरूआ, डॉ0 श्री पर्ण बी0 (2020), ''महिला उद्यमियों हेतु अवसर और चुनौतियाँ'', कुरुक्षेत्र, फरवरी 2020, पृ0सं0 48 से 51 तक।
2. मालवीया, डॉ0 अनिल चौहान जुभान (2023), ''प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना का समाज में महत्व'', डोगो रंगसंग रिसर्च जर्नल, 5 फरवरी 2023

3. चन्द्रा, डॉ0 तूलिका (2018), ''कौशल विकास और महिला सशक्तिकरण शोध मंथन, जून 2018, पेज संख्या– 122–126 तक
4. अध्यक्ष एवं सी0ई0ओ0, भारत, एस0ई0ए0, एम0ई0ए0, सी0बी0आर0ई0, अध्यक्ष, ''कौशल विकास और उद्यमिता के माध्यम से महिला सशक्तिकरण'', अंशुमान पत्रिका, 20 सितम्बर 2024
5. कुमार, आलोक (2017), ''नए ग्रामीण भारत के निर्माण में प्रधानमंत्री कौशल विकास का योगदान'', कुरुक्षेत्र, सितम्बर, 2017, पृष्ठ 14 से 17 तक
6. शर्मा, डॉ0 रामचन्द्र (2017), ''कौशल विकास एक परिचय'', प्रकाशक एपल बुक्स
7. श्रीवास्तव, अवधेश (2017), ''कौशल विकास'', प्रकाशक गुलाबी शहर, 1 जनवरी 2017
8. सीमा, डॉ0 (2017), ''कौशल विकास से सशक्त होती महिलाएँ, कुरुक्षेत्र, सितम्बर 2017, पृष्ठ 44 से 47 तक
9. पूजा, ''प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना'', पूजा प्रकाशन, 2018
10. सेन, अमर्त्य, ''गरीबी और अकाल'', राजपाल और सन्स पब्लिशिंग, 1 जून, 2011